॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य-प्रेरणा

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक पत्र)

वर्ष-2, अंक-11, मास जून 2023 विक्रमी संवत् 2080 दयानन्दाब्द 200 सृष्टि संवत् 1,96,08,53,123

कुल पृष्ठ 8 एक प्रति 5 रूपये वार्षिक शुल्क 50/- रूपये आजीवन 500/- रूपये

सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री www.aryasamajrajandernagar.org दूरभाष:- 011-40224701

जीवन का अनमोल रत्न है-योग

❑ डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

भारत एक ऐसा देश हैं जहां आध्यात्म का प्रकाश है और वह आध्यात्म के प्रकाश से सम्पूर्ण विश्व में शान्ति की स्थापना चाहता है! आज योग को सम्पूर्ण विश्व जान रहा हैं व आचरण में भी ला रहा है। विश्व में आज जो विघटन हो रहा है मानवता को आतंकवाद के कुचक्र में रोंदा जा रहा है! मनुष्य मानवता का मूल्य भूल अपराधों में भौतिक वाद की चमक में खोता जा रहा है। इस चमक दमक को वह सुख समझता है। जिसके लिए दूसरे अन्यों को सताना कष्ट देना शारीरिक मानसिक रूप से क्षति पहुँचाना व पाखण्ड तथा अन्धविश्वासों में घिरा रहता है। इसमें अज्ञानता बढ़ कर चारों ओर अन्धकार ही बढ़ रहा है। फल स्वरूप अनिश्चिता भय चिन्ता का वातावण पनप रहा है। प्राचीन ऋषियों की देन योग विद्या विश्व के लिए वरदान है। भारत के पास वह शक्ति है। जो ऋषि मुनियों की दी हुई है। अपितु विश्व के अन्य देशों में प्रक्षोस्त्र बम परमाणु बम आदि मानव का नाश करने वाली आयुध आदि है भारत के पास दुनिया की शान्ति के लिए योग व योगाभ्यास है। योग करने से मनुष्य के जीवन में सुधार होता है। बुराइयाँ दूर होती है, मानसिक क्लेश दूर होते है, और मनुष्य श्रेष्ठ बनता है। प्रत्येक मनुष्य श्रेष्ठ बनेगा तो समाज श्रेष्ठ बनता जायेगा सभी के श्रेष्ठ बनने से विश्व में श्रेष्ठता आयेगी फलस्वरूप विकृतियां नहीं रहेगी अच्छाइयाँ आयेंगी कोई किसी से द्वेष न करेगा परस्पर वैर न होगा ईर्ष्या न होगी सामाजिक कार्यों में सब सहयोगी होंगे यही तो योग का फल है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक परमात्मा की वाणी है। जहा दया करुणा सत्य है! सन्तान जब श्रेष्ठ मार्ग पर चलती है तो पिता को प्रसन्नता होती है। परमेश्वर भी प्रसन्न होता होगा यदि विश्व के मनुष्य वेद के अनुयायी हो तब पूरा विश्व एक परिवार की भांति ही होगा धरती के पुत्रें का ही कुटुम्ब होगा जिसे 'बसुधैव कुटुम्बकम्' का नाम दिया जायेगा।

आइये एक बार योग का अध्ययन करें जहाँ महर्षि पतंजलि ने इसके आठ अंग बताये हैं इसे ही अष्टांग योग कहते है। यदि प्रथम सीढ़ी अर्थात् अंग को ही आचरण में लावें तो व्यक्ति का जीवन बदल सकता है।

अष्टांग योग में यम नियम आसन विचार प्राणायाम प्रत्याहार धारण ध्यान व समाधि है जहाँ थोडें समय के लिये करते है यम क्या है। यम पांच हैं।

किसी भी प्राणी को मन वचन व कर्म से कोई कष्ट न देना। मन में भी किसी अहित की बात न सोचना कठोर वचन आदि न बोलना कर्म से किसी भी प्राणी की कभी भी कही भी हिंसा न करना अहिंसा है।

जो मन में हो वही वाणी में और जो वाणी में हो वही मन में हो अर्थात् वाणी में सत्य होना चाहिये ऐसा बोलना जिसमें छल कपट प्रपंच न हो वह सत्य है। किसी की चोरी न करना बिना अनुमति के कोई वस्तु न ले मन में भी परायी वस्तु के लिये ऐसी भावना न लावे वह अस्तेय कहाती है। जितेन्द्रिय रहना, काम वासना क्रोधादि दुर्गुणो से दूर रहना यह ब्रह्मचर्य कहाता है। अपनी इन्द्रियों पर अपना वश = रखना चाहिये। आवश्यकता से अधिक धन सम्पत्ति न रखे धन वस्त्र मकान चल अचल सम्पत्ति को यह विचार कर प्रयोग करे कि सब ईश्वर का है। मेरा कुछ नही अर्थात् यदि हम पहले भाग का आचरण करलें तो आज कल की जो भयानक स्थिति है जहां एक दूसरे का विश्वास खो गया है मन में कुछ वाणी में कुछ ऐसा दुराचरण है वह दूर हो जाएगा फिर मनुष्य छल प्रपंच व विश्वास घात नहीं करेगा धोखा नहीं करेगा कहीं अपराध ही न होगा किसी से ईर्ष्या व द्वेष न करेगा तब इसका फल यही होगा कि सब श्रेष्ठ बनेंगे अच्छे बनेंगे। ज्ञान का मूल्य नहीं होता योग अमूल्य है। यही तो ईश्वर की प्राप्ति की सीढ़ियां हैं ज्यों ज्यों हम सीढ़ियों पर चलते जाएंगे ईश्वर के समीप पहुँचते जाएंगे हमारे मन के विकार दूर होते जाऐंगे श्रेष्ठता पवित्रा मन में आती जायेगी हमारी बाधा दूर हो जायेंगी हम श्रेष्ठ बनेंगे श्रेष्ठ नागरिक होंगे श्रेष्ठ समाज होगा श्रेष्ठ विश्व होगा चारों ओर सुख व शान्ति होगी। आज विश्व की आवश्यकता है योग। आइये योग व योगाभ्यास कर अपने जीवन व विश्व को निर्मल तथा श्रेष्ठ निर्माण करें।

-गली -2 चन्द्र लोक
कालोनी, खुरजा 203131

'आर्य-प्रेरण' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रकाश तथा आनन्द

- पं. चमूपति एम.ए.

इससे पूर्व हमने वेद के प्रमाणों से सिद्ध किया है कि स्वर्ग का एक अर्थ इसी आवागमन के चक्र में आनेवाला सुख का काल है। इस सुखद काल की व्याख्या उन मन्त्रों में है जिन्हें अपने विचार से मौलाना ने अगले अध्यायों में आर्यसमाज के मन्तव्यों के विरुद्ध समझकर उपस्थित किया है। आर्य– साहित्य में प्रायरू इस भौतिक जगत् की एक वृक्ष से उपमा दी गई है। यही बात वेद में कही है, जैसे–

"जिस पत्तों से अत्यन्त लदे वृक्ष पर साधक अपनी समस्त इन्द्रियोंसहित आनन्दमग्न रहता है, यहाँ सार जगत् का स्वामी परमेश्वर हम अनादि जीवों पर कृपादृष्टि रखे।"

अनुभूतिमय जगत् का आनन्द तपस्वी लेता है। उसकी समस्त इन्द्रियाँ स्वस्थ रहती है। जीवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त होता है। वेद में पुनः कहा है–

दो सुन्दर पक्षी, आपस में मिले हुए मित्र एक ही वृक्ष पर बसेरा करते हैं। उनमें से एक सुखद फलों को खाता है दूसरा न खाता हुआ देखता है।

"जिस वृक्ष पर मीठे फल खानेवाले पक्षी निवास करते हैं. और सन्तति–विस्तार करते हैं, उसके फल को पूर्वकाल से ही मीठा बताते आये हैं। उसे वह प्राप्त नहीं कर सकता जो अपने भगवान् को नहीं जानता।"

हमारे मौलाना (भगवान् उन्हें कुदृष्टि से बचाये) कभी–कभी बड़े पते की बात कह जाते हैं। फरमाते हैं– "ऐसा लगता है कि यहाँ दो प्रकार के मनुष्य को पक्षियों से उपमा दी गई है। एक पिता (परमेश्वर) को नहीं मानता, यद्यपि वह बैठा बैठा वहीं है, परन्तु वह उस फल को प्राप्त नहीं कर सकता।" (पृष्ठ ८६)

आखिर वेद का कथन है, मौलना जी! इस कथन के सम्बोधन उतने ही है, जितने कोई और। परमेश्वर के कथन को परमेश्वर का भक्त समझ ही लेता वेद के आदेश अत्यन्त स्पष्ट हैं। बुद्धि शुद्ध हो तो शीघ्र समझ में आ जाते हैं। वेद में संसार तथा इस शरीर का नाम अश्वत्थ भी कहा है। (आगे) दो अर्थ होते हैं– प्रथम, कल न रहनेवाला, अर्थात् नश्वर, दूसरा अथ और पुरुषों के अधिकार में रहनेवाला। वेद का आदेश है–

संसार देवताओं के रहने का स्थान है, इसके द्वारा तीसरे (आ) आनन्द के लोक में भक्तों ने मोक्षानन्द, अर्थात् ईश्वर में एकाग्र होने पर नन्द प्राप्त किया है।

इस में स्थिरता के लिए यहाँ 'कृष्ठ' शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'कु' अर्थात् शनियमश आधार तथा 'थ' का अर्थ है 'स्थिरता'॥

कि नौका, जिसका लङ्गर भी प्रकाश का था, इस प्रकाशमय जगत् में। वहाँ अमृत का पुष्प, अर्थात् ईश्वर में स्थिरता का पुष्प प्राप्त किया। 'मार्ग प्रकाशमय थे, चप्पू प्रकाश के थे, नौकाएँ प्रकाश की थीं, जिससे ईश्वर में स्थिरता का पुष्प प्राप्त किया गया।

यह समाधि की अवस्था है। योगी आनन्द के समुद्र में, प्रकाश की नौका में बैठा, तन्मयता का आनन्द ले रहा है। कुष्ठ एक ओषधि का नाम भी है जो क्षयरोग में प्रयुक्त होती है। वेद में उस और भी संकेत कर दिया गया है–

"तुझे उत्पन्न करनेवाली धरती जीवनप्रद है, तुझे पालन करनेवाला प्रकाश (रश्मियाँ) जीवन देनेवाला है।"

"तू ओषधियों में सर्वोत्तम है, जैसे घर के पशुओं में बैल, जैसे वन के पशुओं में सिंह।"

"कुष्ठ अकसीर है, सोम के पास खड़ा है। आध्यात्मिक क्षेत्र में ईश्वर में एकाग्रता अकसीर है। वह श्रद्धा की सखी है। आत्मिक ओषधियों में सिंह है। औषधि के प्राकृतिक प्रमाण के अतिरिक्त ओषधि की प्रशंसा का बौद्धिक प्रमाण भी रोगी को स्वस्थ बनाने में सहायक होता है। वेद के आदेशानुसार, वैद्य अपनी दवाई की उत्पत्ति के सम्बन्ध में रोगी के मन में अत्यन्त आशापूर्ण विचार देगा।

अतः कुष्ठ एक तो ओषधि का नाम है, दूसरा ईश्वर में ध्यानावस्था का नाम, जो सहस्रों ओषधियों की एक ओषधि है। वैदिक सूक्तों में शारीरिक एवम् आत्मिक दोनों अक्सीरों की प्रशंसा एक–साथ की गई है; वेद काव्य श्लेषालंकार से अलंकृत है। वेद का यह कथन देखिये–

"यह संसार देवताओं के रहने का स्थान है। इसके द्वारा तीसरे (आत्मिक) आनन्द का स्थान है, अमृत का आनन्द है। वहाँ कुष्ट (अकसीर) होता है।"

छान्दोग्य उपनिषद् में कहा है– "यहाँ तीसरे (आत्मिक) प्रकाश के लोक में आनन्द का झरना है; वह अश्वत्थ है, वह अध्यात्म का तत्त्व है।

मौलाना ने अर्थ किया है– "वहाँ पीपल का वृक्ष है, जिससे सोम बहता है। उपनिषद् में कहा है, वह अश्वत्थ है, वह सोम से निकाला गया है। अभिप्राय यह है कि आत्मिक आनन्द ही वास्तविक आनन्द है, शेष सब बाहिर का खेल मात्र है। 'ऐरम्मदीय' का शब्दार्थ है 'अन्न का आनन्द।' उपनिषद् में अन्न से अभिप्राय है भौतिक जगत् इस भौतिक जगत् का सुख भी भक्त ही लेते हैं। विलासिता में डूबे व्यक्ति तो अपना भी विनाश करते हैं, और इस जगत् का भी! विष्टारी यज्ञ की व्याख्या हम इससे पूर्व कर चुके हैं– सन्तति – विस्तार का कर्त्तव्य, अर्थात् गृहस्थाश्रम! वेद का आदेश है–

"यह यज्ञों में विस्तृत एवं महान् है। सन्तति–विस्तार का यज्ञ करके (विवाह करके) मनुष्य सुख के लोक में प्रविष्ट होता है, सुन्दर कमल, गोल कमल, नीलोफर और उसके बीज को फैलाता है, इस स्वर्गलोक में (गृहस्थाश्रम में) सुख की सब धाराएँ तुझे सब ओर से प्राप्त हों। कमलों से भरे तालाब, मिठास की वर्षा करते हुए सब ओर से तेरे समीप हों।

ऋग्वेद ६।१३ की व्याख्या इससे पूर्व हो चुकी है। "जहाँ देवस्वभाव के नेता रहते हों, उस प्रिय अमृत से मैं सब ओर से सुख प्राप्त करूँ। बड़ा पग लेनेवाले का वही मित्र है। व्यापक प्रभु के चरणों में मधु का उत्स है।"

हमने पद का अर्थ 'चरण' किया है; इसका अर्थ (प्राप्ति) भी है। उस मिठास

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय

आर्य समाज व इससे जुड़ी युवा शक्ति

❑ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, मो. 9810884124

आज भारत ही नहीं, समस्त विश्व अशान्ति, अराजकता, भ्रष्टाचार से पीड़ित है। कब, क्या घटित हो जाये कहना कठिन है। जनता को भ्रष्ट व्यवहार सहने की आदत हो गई है। मोहमयी प्रमाद मदिरा का पान कर लोग अपने में मस्त है। कठिन परिस्थिति में भ्रष्टाचारी को अनैतिकता सहयोग कर व्यक्तिगत संकट से मुक्त होने की भावना बढ़ चुकी है। ठीक कुछ नहीं हो रहा है। यह सब अनुभव कर रहे हैं किन्तु सामने आकर संघर्ष करने इच्छा शक्ति का अभाव हो गया हैं। प्राय: लोग समझौता-वादी हो गए हैं। अच्छे सदाचारी लोग संगठन बनाकर इन आसुरी शक्तियों से संघर्ष का संकल्प ले। यह समय की आवश्यकता है। राष्ट्र और समाज हित की इच्छा से पारस्परिक मनोमालिन्य से रहित होकर ही इस भ्रष्ट दानव से लड़ा जा सकता है इस मूकता और जड़ता की स्थिति से संकल्पवान योद्धा ही पार पा सकते हैं। सत्ता या सरकार से इसमें सुधार की आशा नहीं की जा सकती। बड़े-बड़े भ्रष्टाचारी या तो सत्ता के अंग हैं या उनपर सत्ताधारियों का वरद हस्त है। इस लिए राजनीतिक उठा पटक से शून्य, सदाचारी समाज सेवक ही इस शून्य, सदाचारी समाज सेवक ही इस उत्तर दायित्व का निर्वहन कर सकते हैं और उन्हें ही यह करना भी चाहिए। आर्य समाज तथा इससे जुड़ी युवा शक्ति इस दिशा में सार्थक प्रयास कर सकती है। अतीत में चाहे हैदराबाद का सत्याग्रह हो या अन्य आपदायें आर्यसमाज ने आगे बढ़कर उस कलंक-पंकसे मानवता को बचाया है। आज देश को फिर से इससे वही अपेक्षा है। अनैतिकता और भ्रष्टाचार के दानव का अन्त इस खलनायकों के वश की बात नहीं। किसी कवि ने ठीक लिखा है-

पतन होता कभी नैतिकता का जब, सिसकती है सभ्यता इतिहास रोता है।
लाद कर अपनी छल, छद्म का जब बीज बोता है।
अरथी निकलती है, उसी दिन आस्था की,
एकदिन कोने में दुबक कर विश्वास रोता है।
सच्चाई को रौंदकर पैरों तले, हवस का जब अस्मिता पर वार होता है
मानवता की मौत पर श्रद्धांजलि सभा में दे रहा हैवान होता है।

माँ की परिकल्पना

प्रकृति के प्रत्येक तत्त्व में-

❑ समुद्र ने कहा-मां गहराई का अनमोल रत्न है। जो अपनी औलाद के लाखों गम दिल में छिपा लेती है।

❑ बादल ने कहा-मां वह चमक है जिसमें हर रंग साफ तौर से दिखाई देता है।

❑ शायर ने कहा-मां एक ऐसी गजल है जो हर दिल वाले के दिल में उतर जाती है।

❑ माली ने कहा-मां बाग वह खूबसूरत फूल है जिससे पूरे बाग को खूबसूरती और महक मिल जाती है।

❑ जज ने कहा-मां वह शब्द है जिसकी तारीफ के लिए अल्फाज नहीं मिलते।

❑ दुआ ने कहा-मां वह है जो अपने बच्चों की खुशहाली के लिए भगवान से दुआ मांगती है।

❑ भगवान ने कहा-मां मेरी ही तरह एक कीमती तोहफा है।

❑ जन्नत ने कहा- मां वह जज्बा है जिसके कदमों तले मैं हूं।

❑ दुनिया ने कहा-मां नूर है, महक है, मोहब्बत है, दुआ है, जन्नत है, तोहफा है, अनमोल जज्बा है

(पृष्ठ 2 का शेष)

तथा माधुर्य के क्या कहने, जो परमेश्वर की भक्ति और उसके मिलाप से प्राप्त होता है। ऋग्वेद १। १२५। ४ में दान देने का आत्मिक सुख बताया गया है–

"यज्ञ करनेवाले की और ही नहीं, यज्ञ करने का निश्चय करनेवाले की ओर भी सुख की नदियाँ तथा आशाओं के नद बहते हैं। दानी की, जनता की भावनाओं को पूर्ण करनेवाले की ओर यश तथा प्रकाश की धाराएँ उमड़ती हैं।

"जो दान करता है, वह सुख के ऊँचे शिखर पर खड़ा होता है, उसका स्थान देवताओं में होता है। बहता पानी भी उसके लिए घृत का प्रभाव रखना है, उसकी दानशीलता उसे समृद्ध बनाती है।"

"सत्य के मार्ग को भली प्रकार देख, जिस पर साधक, पुण्यात्मा चलते हैं, उन्हीं मार्गों से सुख के लोक को प्राप्त कर! जहाँ स्थिरचित्त ईशभक्त, सत्य मार्ग के पथिक सुरक्षित होते हैं। तीसरी (आत्मिक) सुखद अवस्था में स्थिर हो।" स्वर्गा लोका अमृतेन विष्ठा इषमूर्जं यजमानाय दुह्यम्।

(अ. १८ । ४।४) यज्ञ करनेवाले को सुख की विभिन्न अनुभूतियाँ, जिनका आधार प्रकाश है, इच्छापूर्वक प्राप्त हों। "सुख की अनुभूतियाँ जिनमें अमृत भरा है, यज्ञकर्त्ता को सांसारिक एवम् आत्मिक आनन्द देती हैं।" "शक्ति के केन्द्र अंग, जो तेरी इन्द्रियों सहित विद्यमान हैं, वे तेरे शुभकर्मों का केन्द्र होकर मिठास तथा प्रकाश देनेवाले हों।"

ऋग्वेद ६।४।६ का अनुवाद पहले किया जा चुका है। "ऐ मनुष्य! तेरे जो पूर्वज हो चुके हैं, और जो उनके पश्चात् विद्यमान हैं उनके लिए सौ धाराओं की भरी घी की नदी चले। अर्थात् जीवितों को खिला और मृतकों का दाह–कर्म कर।

ब्रह्मचारी कहता है–'ब्रह्मचारी की अकसीर, मेरे पास घी की धारा तथा भक्ष्य पदार्थों का रस लाई है। "जो जवित हैं, जो मर चुके हैं, जो उत्पन्न हुए (शिशु) हैं, तथा जो पूज्य हैं, उनके लिए मिठास की धाराओंवाली घी की भरी नदी बहे। मृतकों का तो शव घृत से ही जलाया जाता है, जीवित आबालवृद्ध की सेवा–शुश्रूषा गृहस्थाश्रम के स्वर्ग में रहनेवाले गृहस्थ का कर्त्तव्य है।

ओ३म् यां मेधां देवगणः

❑ गोरी शंकर धवन

ओ३म् या मेघा देवगणः में प्रभु से बुद्धि की कामना करते हैं, हमारी बुद्धि पवित्र हो, सन्मार्ग पर चलने वाली हो। बुद्धि पवित्र रखने के लिए हम सत्संग, स्वाध्याय, प्रभु चिन्तन आदि का सहारा लेते हैं और इसके विपरीत यदि बुद्धि कुमार्ग की ओर चल दे तो हमारी कामनाएँ बढ़ जाती हैं और कोई इच्छा या कामना पुरी ना होने पर हमें क्रोध आता है और क्रोध में हम आपा खो देते हैं और हमारा चेहरा ऐसा हो जाता है मानों कि कोई राक्षस। ठीक इसी वक्त अगर कोई व्यक्ति शीशा देखे तो यही बात सही साबित भी हो सकती है। क्रोध से हमारे दिल–दिमाग पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है, हमारा बल्ड प्रेशर बड़ जाता है हमें अपने सामने छोटे–बड़े की कद तक नहीं रहती। हमारे रिश्ते अति महत्त्वपूर्ण होते हैं, जिन्हें हम पल भर के क्रोध में ही तोड़ देते हैं। इस क्रोध के कारण हम अपना प्रिय से प्रिय मित्र भी खो देते हैं, कुछ गलतफहमियां भी हमें क्रोध की स्थिति में ला सकती हैं। हमें चाहिए कि हम अगर अपने आपको अपने ही कारण अस्वस्थ पाएँ तो सबसे पहले ठंडे जल का सेवन कर एक बात जरूर सोचें कि आपने किसी से कुछ अत्याधिक उम्मीद तो नहीं लगा रखी थी, बस उस उम्मीद ना पूर्ण होने वाली उम्मीद की प्रतीक्षा बन्द करो। चाहे वो उम्मीद भगवान से हों, किसी रिश्तेदार से हों या फिर मित्र से ना पूर्ण होने वाली इच्छाएं हमें दुःखी करती हैं। हमने उसके साथ इतना किया परन्तु उसने हमारे साथ कुछ भी तो नहीं किया। ऐसा ही अनेक झूठी उम्मीदें हमारे रिश्तों को तोड़ देती हैं, किसी के साथ सार्मथ्य अनुसार ही बरतो ताकि बाद में पछतावा ना हो। रिश्ते व नाते अति नाजुक है इन्हें कभी टूटने ना दें। सत्य ही कहा है–

"रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाऐं,
टूटे से जुड़े नाही, जुड़े गांठ पड़ जाएं॥
ज्यादा उम्मीद मत लगाओ, इन्सान ही तो हैं,
थोड़ा फासला भी रखो, दुनियां ही तो है।
हमारे खुद से किये वायदे भी टूटने लगते हैं,
किसी से कोई उम्मीद ना ही रखो तो बेहतर होगा।"

अपना सहयोग प्रदान करें।

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली की गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपना सहयोग प्रदान करते रहें। आप अपना सहयोग क्रॉस चैक द्वारा आर्य समाज राजेन्द्र नगर के नाम से कार्यालय: आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के पत्ते पर भिजवाये अथवा सीधा ऑनलाइन भी जमा कर सकते हैं। खाता संख्या–3075000100082363, IFSC-PUNB307500, पंजाब नेशनल बैंक।

–अशोक सहगल (प्रधान)

MESSAGE OF GITA

❑ **Dr. Mahesh Vidyalankar**

Cotinue from last issue

THE WORLDLY PLEASURES

Gita throws light on almost every aspect of human life. Gita shows us the correct way to live the life well. Knowledge of Gita took concrete shape in a situation surrounded by worry, tension and conflict. In one situation of life, the man, faced with difficulties, problems and confusions, gives up courage and runs away from the reality. In the other, the converse situation, the man faces the adversities patiently and comes out victorious in the struggle. Gita favours the latter course. Lord Krishna expalins to Arjuna:

योगस्थः कुरु कर्माणि
त्यक्त्वा संगं धनंजय।

" O Arjuna! setting aside your attachment to the world, do your duty to the humanity, with a state of mind absorbed in contemplation of the Supreme Spirit." Don`t get nervous in the face of difficulties. Life is struggle. Fear not. One who dares, wins. Gita does not preach resignation. Says Gita, "Do not run away from the world. Keep awake resolutely. Enjoy the world in a normal and regular way, but with detachment. Be constantly in company of knowledge, action and worship while staying a family man." Lord Krishna has, through Gita, given the man the message of staying jivan-mukta (free from worldly bonds). Gita trains you in the art of living.

Look at the inspiring words of Gita:'The true human being is one, who, while walking along the path of sincerity and honesty, maintains his balance and observes his duty and social obligation earnestly: It further says:

यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र
लोकोऽयं कर्मबन्धनः।

"Actions not performed with the spirit of yajna, place the man in bondage." Our actions should be for the good of the others. The man who dedicates his achievements to God will inculcate in himself, the sense of detachment; he shall be free of selfishness, and thus the spiritual awakening will take place. Such a man will be known as a spiritual person, an ascetic, a renouncer, even if he continues with his usual worldly engagements. All the actions performed with the spirit of good to others and renunciation of worldly pleasures are yajna. The entire creation is a non-stop yajna, initiated by the Almighty.

The spirit of yajna creates happy conditions. Actions performed without selfishness are no longer a binding for the man. It is the bindings created by man`s actions that he experiences happiness or distress. Salvation is understood as liberation from those bindings. Actions inspired by a man`s ego place around him the chains responsible for different kinds of experience. Gita`s teaching is:

लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा

"Such a man, who is not fettered by results of his actions, rises above sins the way a lotus in water remains untouched by water." As the water level rises, so does the lotus. It doesn`t allow the water to stay even for a moment on its leaf. This is the philosophy of life propounded by Gita. It teaches us to live in the world as a lotus; do live in the world, but don`t get stuck into it. Pass through the bazaar without being attracted by its wares. Do not be drowned in the objects of worldly pleasures, fascination, wealth and money, home and family to an extent that you just become oblivious of your own nature and aim of life. Says Lord Krishna: "The world is meant to be enjoyed and experienced by you It doesnot belong to you. You are the caretaker of this world, not its owner. Your association with this world, is for a short period. One day, you will have to leave it. If you remain somewhat indifferent to this world during lifetime, you will not feel pain and distress when you leave it. Only those are pained and distressed who mistake everything in the world for human life. For them, enjoying the world is the aim of their life."

The people have forgotten their duty and responsibility to the humanity, aim of life and God himself, and are running madly after worldly pleasures, wealth and money. That is why they are sad, perturbed and distressed. There is no end to pleasures.

There are heaps of pleasurable things scattered all over. The ordinary man is running like a mad to acquire these and enjoy them. It is a rat race. The wealth being collected today is motivated by the desire to enjoy the world. A good part of money is being spent for treating the diseases born of those enjoyments.

बेवजह कुण्डी खट-खटाया करो

❑ राकेश दुरेजा

आसपास के लोगों से मिलते रहा करो,
उनकी थोड़ी खैर खबर भी रखा करो।
जाने कौन कितने अवसाद में जी रहा है,
पता नहीं कौन बस पलों को गिन रहा है।
कभी निकलो अपने घौंसलो से,
औरों के आशियानें में भी जाया करो।
कभी-कभी अपने पड़ोसियों की कुण्डी,
तुम बेवजह ही खट-खटाया करो।
कभी यूं ही किसी के कंधे पर हाथ रख,
साथ होने का अहसास लोगों से बतियाया करो,
बिना जज किये बस सुनते जाया करो।
कुछ टूटे मिलेंगे, कुछ रूठे मिलेंगे,
जिन्दगी से मायूस भी मिलेंगे।
बस कुछ प्यारी सी उम्मीदें,
कभी उनके दिलों में जगाया करो।
ऐसा न हो फिर वक्त ही न मिले,
और मुट्ठी की रेत की तरह लोग फिसलते रहे।
यूं वक्त-बेवक्त ही सही,
लोगों को गले तो लगाया करो।

आकाश और धरती

दूर बहुत दूर एकान्त में आकाश ने धरती का माथा चूमा और कहा ''देवि! दिन रात दौड़ती हो, क्या तुम्हें थकान नहीं होती? कभी विश्राम भी ले लिया करो।'' रुके बगैर धरती एक साँस में बोली ''देवता! कर्त्तव्य पालन में एक ऐसा आनन्द है, जिसके प्राप्त होने पर सारी थकान उतर जाती है।''

जीवन मृत्यु

बाग में पत्तों ने तालियाँ बजा कर सूचना दी कि बसन्त आ गया है, सुनते ही हरियाली झूम उठी। वातावरण में मस्ती छा गई। पवन के आते ही अपने मित्र फूल को गुदगुदाया। नींद से चौंक कर पुष्प ने अपने मित्र को देखा तो खिलखिला उठा। हँसी की आवाज सुनकर कली ने घूंघट का एक कोना पुष्प को कनखियों से देखा और मुस्करा दी।

उद्यान के मादक वातावरण को देखकर किनारे पे खड़े एक ठूंठ ने कहा, मित्रो! क्यों इतना प्रसन्न हो रहे हो, यह बसन्त चार दिन का है फिर कोई पतझड़ का झोंका आएगा और तुम्हें धराशायी कर देगा, फिर तुम्हारी वही दशा होगी जो आज मेरी है, मृत्यु की लपेट से कोई नहीं बच सकता। ठूंठ ने बात समाप्त ही की थी कि धरती की परत को चीर कर एक अंकुर ने सिर उठाया और कहा ''दादा! तुम्हारी बात अन्तिम नहीं है। तुम्हें पता होना चाहिए कि जिंदगी मौत के परदों को चीर कर संसार को फिर स्वर्ग बना दिया करती है।''

- ललिता कुमार

71वां वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्यजनों के हृदयोदगार

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली द्वारा 71वां वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्य जनों के हृदयोदगार।

1. बरसी वर्षा वेद ज्ञान की - डॉ. देवेन्द्र राम जी।
2. सेवा सहयोग और समर्पण का सुअवसर-आर्य समाज राजेन्द्र नगर, डॉ. आनन्द चौहान जी।
3. आओ मिलकर संकल्प करें स्वामी दयानन्द के विचारों को घर-घर तक पहुंचाना है -अजय सहगल जी।
4. 11 कुण्डीय महायज्ञ यज्ञ दित्यता का भव्य स्वरूप था - डॉ. श्रीमती चन्द्र प्रभा शास्त्री जी।
5. सात्विक आचार-विचार से अपने जीवन को यज्ञमय बनायें -आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी।
6. आचार्य शिवदत्त पाण्डेय जी एवं आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी, भानु प्रकाश शास्त्री जी के प्रवचन भजन सुन आर्यजन हुए प्रसन्न-अशोक सहगल जी
7. दिल्ली की समस्त आर्य समाजों में प्रथम स्थान देता हूँ। आर्य समाज राजेन्द्र नगर को डॉ. महेश विद्यालंकार जी।
8. आर्य समाज सत्संग भवन यज्ञशाला पार्क को सजाया गया दुल्हन की तरह-उमा अब्बी जी।

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली

71वां वार्षिकोत्सव की सुन्दर झलकियां

प्रथम चित्र में अमेरिका से पधारे साहनी परिवार श्री संजीव साहनी एवं परिवार ने यज्ञ किया। द्वितीय चित्र में स्व. माता श्रीमती पुष्पा साहनी जी को भी अशोक सहगल जी एवं उम्मा अब्बी जी एवं आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने स्मरण किया।

प्रथम चित्र में सुविचार पुस्तक के विमोचन पर श्री नरेन्द्र मोहन बलेचा जी सभी का धन्यवाद करते हुए। द्वितीय चित्र में कार्यक्रम के विशेष अतिथि श्री आनन्द चौहान जी एवं मृदुला चौहान जी, सरोज सहगल जी, अशोल सहगल जी एवं गवेन्द्र शास्त्री जी।

प्रथम चित्र में प्रधान अशोक सहगल जी धन्यवाद ज्ञापित करते हुए एवं श्री अजय सहगल उद्‌बोधन देते हुए। द्वितीय चित्र में श्री राज बजाज बाल सम्मेलन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए। तृतीय चित्र में उपस्थित श्रोतागण।

प्रथम चित्र में सभी आर्यजन उद्‌घाटन एवं ध्वजारोहण करते हुए। द्वितीय चित्र में आर्य समाज राजेन्द्र नगर की प्राचीन धरोहर मातृशक्ति।

R.N.I.No. DEL BIL/2007/22120
Date of Publication 20-05-2023

Delhi Postal R.No. DL(C)-14/1431/2021-23
Posted at SRT Nagar PO, New Delhi-55
Postin ate: 7-8 Every Month

सेवा में,

आर्य प्रेरणा

जून-2023

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली

71वां वार्षिकोत्सव की सुन्दर झलकियां

आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी प्रवचन करते हुए तथा यज्ञ में उपस्थित यज्ञ प्रेमी।

अतुल सहगल एवम् साक्षी बहल छात्र एवं छात्राओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए। द्वितीय चित्र में महाराणा प्रताप जी की जयंती के अवसर पर उपस्थित बच्चे एवम् विजय तनेजा, भीष्म लाल, सुरेश चुघ, श्रीमती कविता जी एवम् गवेन्द्र शास्त्री जी।

डॉ. श्रीमती चन्द्र प्रभा शास्त्री जी को सम्मान करते हुए उमा अब्बी, सुदर्शन ग्रोवर, वीना बजाज, सुशीला वर्मा, अशोक सहगल एवं ललिता कुमार

छात्रों को पुरस्कार एवं छात्रवृत्ति प्रदान करते हुए सुरेश सुघ एवम् मृदुला जी

Printed and published by Mr. Narinder Mohan Walecha secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Mayank Printers, 2199/63, Naiwala, Karol Bagh, New Delhi-110005 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060.
Editor: Aacharya Gavendra Shastri